पवित्रता, त्याग...

या जिनके शिष्यों ने देश की सीमाओं को पार करके अन्य देशों में अपने मन्तव्यों का प्रचार किया परंतु उनके इस प्रचार से कितने ऐसे लोग तैयार हुए जिन्होंने दृढ़तापूर्वक ब्रह्मचर्य व्रत का पालन, आहर, विहार, व्यवहार तथा आचार, संग और अध्ययन की पवित्रता का पालन किया और जिन्होंने योगयुक्त होकर ईश्वरानुभूति की तथा माया को चुनौती दी कि वह संसार छोड़ दे ? यह पिताश्री के त्याग और तपस्या एवं पवित्रता तथा आत्मनिष्ठा ही का फल था कि अनेकानेक परिवारों और नर-नारियों ने अपना जीवन ईश्वरीय सेवा में लगा दिया। जीवन एक बहुत बड़ी और मूल्यवान निधि है। अत: समस्त जीवन को एक ही लक्ष्य के प्रति लगा देना और स्वेच्छा से स्वयं को अनेक व्रतों में संकल्प-बद्ध करके उसी में जीवन लगा देना कोई मासी जी या खाला जी का घर नहीं है। यह तभी संभव है जब जीवन में नित्य प्रगति और प्रेरणा का स्रोत बना रहे और दिव्य अनुभूतियां होती रहें। इससे स्पष्ट है कि पिताश्री का जीवन नित्य प्रेरणा और प्रगति का स्रोत था। वह पवित्रता-त्याग-तपस्या-सेवा का चतुर्मुखी मूर्त्त रूप था। उससे ऐसा बल जन-जन को मिला कि उन्होंने स्वयं को तथा जगत को बदल देने का दृढ़ संकल्प लिया।

ऐसा भला कहां होता है कि जीवनभर ही प्रतिदिन कोई ज्ञान श्रवण करता रहे, नित्य-प्रति ही प्रात: उठकर सर्दी-गर्मी में योगाभ्यास में लगा रहे और सभी प्रलोभनों तथा यातनाओं को खदेड़कर महावीर की न्यायीं बढ़ता चले ? यह पिताश्री का अपना उदाहरण था कि जिसने सहस्त्रों आत्माओं को सदा के लिए ऐसा उत्साही बना दिया कि आलस्य और प्रमाद वहां से दुम दबाकर भाग गए। पिताश्री चाहते तो एकांत में किसी रम्य स्थान पर सुख-सुविधा-सम्पन्न एक भवन-बंगला बनाकर उसमें समाधि लगा लेते। तब न तो लोगों का हो-हल्ला सुनना पड़ता, न उनकी कटु आलोचनाओं तथा तेज-तर्रार कटाक्षों का सामना करना पड़ता। परंतु उन्होंने धन-दौलत लगाकर दूसरों के भी मनोविकारों को मिटाने का 'झंझट' सहर्ष मोल लिया। उन्होंने गालियां सुनना स्वीकार किया और महिमा से मुख मोड़ा क्योंकि उनसे दूसरों का दु:ख देखा नहीं जाता था। वे ऐसे स्वार्थी नहीं थे कि केवल अपनी ही मुक्ति और जीवनमुक्ति का पुरुषार्थ करते। उन्होंने तो व्यावहारिक रूप में विश्व को एक कुटुम्ब मानकर, पितृवत रीति से सभी को नैतिक एवं आध्यात्मिक निधि से निहाल करने का बीड़ा उठाया और अंतिम घड़ी तक कभी भी वे उस उद्देश्य से पीछे नहीं हटे।

युवाओं के रूझान...

कि हमारा यही प्रयास रहा है कि अधिकतर लोग मूल्यनिष्ठ शिक्षा के प्रति स्वयं को जागरूक बनाएं।

कार्यक्रम में संस्था की संयुक्त मुख्य प्रशासिका दादी रतनमोहिनी, अतिरिक्त सचिव ब्र.कु.रमेश शाह, सूचना एवं जनसम्पर्क निदेशक ब्र.कु.करूणा, ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्षा ब्र.कु.मोहिनी, शिक्षा प्रभाग के उपाध्यक्ष ब्र.कु.मृत्युंजय, दूरस्थ शिक्षा के निदेशक पांड्यामणि, अन्नामलाई विश्वविद्यालय के सेंटर फॉर योग शिक्षा प्रभाग के निदेशक डॉ.एस.विश्वनाथन ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर केन्द्रीय विद्यालय के विद्यार्थियों ने आकर्षक प्रस्तुतियों से उपस्थित लोगों का स्वागत किया। मूल्यनिष्ठ शिक्षा व आध्यात्मिकता का संदेश प्रवाहित करने वाली रैली भी निकाली गई।

टीवी चैनल्स में ब्रह्माकुमारीज के कार्यक्रम

जागरण टीवी : सुबह 4.00 से 6.00 बजे
राष्ट्रीय सहारा समय : सुबह 6.55-7 बजे, दोप. 2.50-3 बजे
आस्था : रात्रि 7.10 से 7.40 बजे
जी-24 (छत्तीसगढ़): सुबह 5.30 से 6.00 बजे
जीटीवी (तमिल) : दोप. 2.30 बजे से 6 बजे (सोम. से शुक्र)
दीसा चैनल : सुबह 6.10 से 6.40

ईटीवी सुबह 5.00 से 5.30 (प्रतिदिन)
उ.प्र., म.प्र., बिहार, झारखण्ड, राजस्थान, महाराष्ट्र

ईटीवी – उड़ीसा, कर्नाटक –सुबह 5.30–6.00 (प्रतिदिन)

BSNL IP TV (Divine Box)
Om Shanti Channel (24 Hours)

EASY Box (BoL) (प्रतिदिन)
सुबह 7 बजे से रात्रि 11 बजे तक

मो टीवी – तेलगु सुबह 5.30 बजे से 6.00 बजे तक
मो म्युजिक – तेलगु सुबह 6.00 से 6.30 बजे तक
भक्ति – तेलगु सुबह 10.00

विदेश –आस्था इंटरनेशनल में – यूके – 8.40 जीएमटी
यूएसए व कनाडा 8.40 ईब, यूके व यूएस स्टार सुबह 7-7.30

आबू चैनल के अंतर्गत आबू भक्ति 24 घंटे म्युजिक चैनल

डिवाइन बाक्स के लिए सम्पर्क करें – 9414152296

ओम शान्ति मीडिया का नवीन संकलन '' कथा सरिता '' एवं ''हैप्पीनेस इंडेक्स'' अब उपलब्ध है

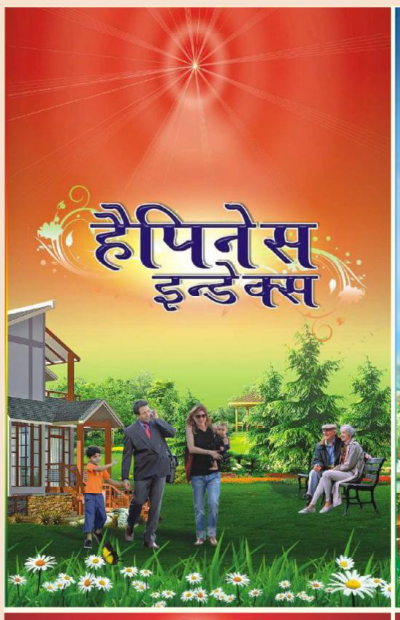

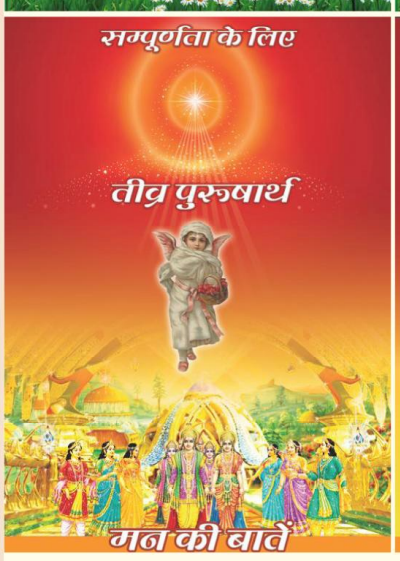

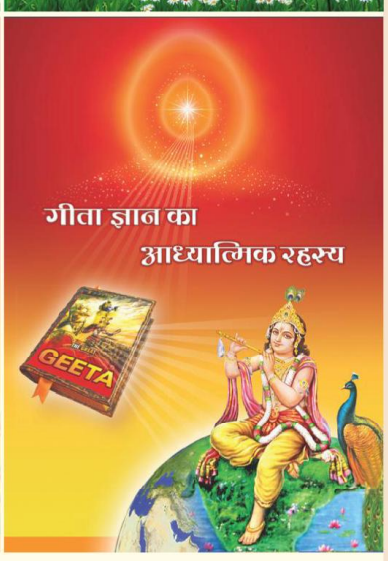

पाठकों की विशेष मांग पर ओम शान्ति मीडिया में निरंतर प्रकाशित हो रहीं शिक्षाप्रद कहानियों का संग्रह ''**कथा सरिता** '' तथा ब्र.कु.शिवानी की प्रवचनमाला का संग्रह ''**हैप्पीनेस इंडेक्स**'' अब उपलब्ध है। ओम शान्ति मीडिया, शांतिवन के कार्यालय से प्राप्त कर सकते हैं।

आत्म-चिंतन से स्वयं को करें एकाग्र

मन को एकाग्र करते हुए अपने जीवन में उस परम शक्ति, परम प्रकाश के उजाले को आने दें। उसी के आधार पर अपने जीवन को प्रकाशित कर ले। अपनी बुद्धि को तेजस्वी बना दें। तो ये है परमात्मा के साथ ध्यान लगाने की विधि। सभी स्वस्थ होकर के बैठेंगे, पीठ सीधी हो और जैसे-जैसे मैं आपको विचार देती जाऊं उन विचारों को सिर्फ सोचो ही नहीं लेकिन साथ ही साथ अपने हृदय में उस भाव को भी भरते जाओ। भाव को भरते हुए अपने में वो शक्ति को महसूस करो।

कुछ क्षण के लिए..... अपने मन और बुद्धि को ....बाह्य सभी बातों से समेट लेते हैं। तन की एकाग्रता....मन की एकाग्रता को सहज ले आती है.....इसलिए अपने शरीर को भी ....अपनी इंद्रियों को भी .....एकाग्र कर लें। अंतर्चक्षु से .....स्वयं को....भृकुटी के मध्य में....आत्मा रूप प्रकाश पुंज स्वरूप में....एकाग्र करती हूँ....ये शरीर मेरा साधन है..... मैं आत्मा साधक हूँ.....आत्मा स्वरूप में....अपने मन को स्थित करें.... मैं आत्मा ...अति सूक्ष्म.....प्रकाश स्वरूप हूँ.... अजर, अमर, अविनाशी शक्ति.....चैतन्य शक्ति.....धीरे-धीरे....मन और बुद्धि को....ले चलते हैं एक यात्रा पर....परमधाम की ओर.....पंच तत्व की दुनिया से दूर....सूर्य चंद्र तारागण से भी पार..... परमधाम में ....जो दिव्य प्रकाश से ...आलोकित है.....जहाँ चारों ओर .....दिव्य प्रकाश फैला हुआ..... अंतर्चक्षु से..... स्वयं को उस दिव्य लोक में...निहार रही हूँ.....जहां कोई बंधन नहीं .....कोई बोझ नहीं.....मैं वहां स्वतंत्र हूँ.....संपूर्ण मुक्त अवस्था में हूँ.....मैं आत्मा ....अपने संपूर्ण सतोगुणी स्वरूप में..... मेरा स्वरूप .....शुद्ध और पवित्र है.....दिव्य प्रकाशमान है.....चारों ओर

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

-वरिष्ठ राजयोग शिक्षिका, ब्र.कु.उषा

पवित्रता की दिव्य आभा फैली हुई है.... उस दिव्य प्रभा मंडल में .....मैं स्वंय को देख रही हूँ.....महसूस कर रही हूँ.....कितना सुंदर स्वरूप है ये मेरा.....कितना अलौकिक रूप है ये मेरा.....धीरे-धीरे.....मैं स्वयं को .....पिता परमात्मा के सानिध्य में देख रही हूँ.....जैसे मैं आत्मा प्रकाशपुंज हूँ.....वैसे मेरे पिता परमात्मा भी.....दिव्य प्रकाशपुंज हैं.....सूक्ष्म ते सूक्ष्म.....अति सूक्ष्म स्वरूप है.....परंतु तेजोमय है.....चारों ओर दिव्य प्रकाश का आभा मंडल है.....जो सर्वश्रेष्ठ है.....सर्वशक्तिमान है.....मनुष्य सृष्टि का बीज स्वरूप है.....सभी देवों का भी देव है.....सर्वोच्च शक्ति है.....उस सर्वश्रेष्ठ परमात्मा के सानिध्य में .....स्वयं को महसूस कर रही हूँ.....सर्वशक्तिमान परमात्मा से.....सर्व शक्तियों की किरणों को.....मैं स्वयं में समाती जाती हूँ.....मेरे पिता परमात्मा.....प्रेम के सागर हैं.....असीम प्रेम.....मुझपर बरस रहा है.....मैं कितनी सौभाग्यशाली हूँ.....जो परमात्मा प्रेम की ...पात्र आत्मा बन गयी.....कितना सुंदर अनुभव है.....परमात्मा की अनंत किरणें.....मुझमें समाती जा रही है.....जैसे अनंत किरणों की बाहों में .....परमात्मा मुझे समाते जा रहे हैं.....समा जाओ.....खो जाओ.....परमात्मा प्रेम में.....परमात्मा की असीम स्नेह की रश्मियां.....मुझपर बिखर रही है.....ये परमात्म प्रेम.....मेरे इस जीवन को धन्य-धन्य कर रहा है.....कितना सुंदर ये अनुभव.....जैसे परमात्म प्यार के झूले में.....मैं हर पल व्यतीत कर रही हूँ.....सर्व संबंधों का सुख....परमात्मा से प्राप्त कर रही हूँ.....जो अतिन्द्रिय सुख है.....सुख को स्वयं में समाते हुए.....मैं अपने मन और बुद्धि को ....वापिस .....इस पंचतत्व की दुनिया की ओर.....शरीर में.....भ्रकुटी के मध्य में.....स्थित करती हूँ.....अपने सर्व कर्मन्द्रियों को .....अधिकार में ले रही हूँ.....और स्वयं को.....आत्मा के आधिपत्य में .....स्थित करती हूँ.....अब मुझे परमात्म स्नेह को.....सर्व शक्तियों को.....नित्य प्रवाहित करना है....अपने कर्म में.....व्यवहार में...।